

वर्कशाप को सम्बोधित करते निदेशक डा. नरेन्द्र मोहन।

छाया-आज

चीनी उद्योग के लिए ब्रांड, पैकेजिंग-मार्केटिंग जरूरी

□ निर्यात में छोटे एशियाई देश थाईलैण्ड से भी पीछे है भारत

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 7 जुलाई। राष्ट्रीय शक्ति संस्थान, कानपुर की ओर से आयोजित पांच दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स कार्यक्रम में मुख्यवक्ता के रूप में सुपर टेक्नोलॉजिस्ट्स एसोसिएशन आफ इंडिया, नई दिल्ली के अध्यक्ष डा. जी.एस.सी.राव ने कहा कि चीनी के लिए ब्रांड, पैकेजिंग और मार्केटिंग की जरूरत है ताकि चीनी उद्योग को मजबूती मिल सके। उन्होंने चीनी उत्पादक राज्यों की बाजार व्यवस्था के बारे में विस्तृत जानकारी दी और उनसे जुड़े मार्केटिंग पहलुओं को बिंदुवार विस्तार से बताया है। संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने कहा कि

चीनी के वैश्विक उत्पादन में देश का योगदान १४ से १६ प्रतिशत है और निर्यात के मामले में हम कई छोटे एशियाई देश जैसे थाईलैण्ड से भी पीछे हैं। पेट्रोल में मिलाने के लिए ५ प्रतिशत ब्लेंड हेतु भी एथेनाल नहीं बना पा रहे हैं। बीआईजी-जीटीसीसी का प्रयोग कर प्रति २०० गन्ने से लगभग दो गुनी बिजली बना सकते हैं। इसी तरह हम मोलासेस के स्थान पर गैर परंपरागत श्रोतों जैसे मोठी चरी, चुकंदर तथा लिनोसेलुलॉसिक बायोमास से एथेनाल बनाने की दिशा में अग्रसर होना चाहिये। आईएसजीईसी, नई दिल्ली से अनुराग गोयल ने चीनी मिलों में कम्प्यूटर एडेड

डिजाइन (कैड) के द्वारा प्रेसर कोजनेशन व्यवस्था के बारे में प्रकाश डाला। इससे पहले कार्यक्रम का उद्घाटन सीएसजेएमयू के कुलपति प्रो. जे.बी. वैशम्पायन ने किया। डा. आशुतोष बाजपेयी ने चीनी मिलों (विशेषकर उत्तर भारतीय चीनी मिलों) की मुख्य समस्या कम परता की है। इन चीनी मिलों में इसकी भरपाई हमें चीनी मिलों की कोजनेशन सहित कच्ची एवं सफेद चीनी बनानी चाहिये। साथ-साथ बी हैवी मोलासेस से अल्कोहल का उत्पादन करना उचित होगा। एम.के. बनर्जी ने चीनी मिलों को डीसीएस (डिस्ट्रीब्यूटेड कंट्रोल सिस्टम) के बिना चलाने की कल्पना संभव नहीं है।

अमर उजाला

08-07-2014

‘शोध से बिजली उत्पादन दोगुना संभव’

● राष्ट्रीय शक्ति संस्थान में पांच दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स शुरू
अमर उजाला ब्यूरो

कानपुर। नए शोधों का अपनाकर बिजली की उत्पादक क्षमता को दुगना किया जा सकता है। इससे चीनी उद्योग को फायदा होगा। यह बात राष्ट्रीय शक्ति संस्थान, कानपुर के डायरेक्टर नरेंद्र मोहन अग्रवाल ने कही। वे इंस्टीट्यूट में आयोजित पांच दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स के पहले दिन बोले रहे थे।

उन्होंने बताया कि चीनी उत्पादन के बाद वेस्ट फाइबरस मेटेरियल बगास को गैस रूप में परिवर्तित किया जाए। गैस को गर्म करने से स्टीम निकलेगी, जिसको टरबाइन में चलाया जाएगा तो पावर डबल होगी। इससे बिजली की उत्पादक क्षमता को डबल किया जा सकता है। देश की कुल 528 चीनी मिलों में यदि यह प्रक्रिया शुरू की जाए



राष्ट्रीय शक्ति संस्थान में बोलते निदेशक नरेंद्र मोहन।

तो 7000 मेगावाट बिजली पैदा की जा सकती है। अभी परंपरागत तरीके से 3500 मेगावाट बिजली का उत्पादन किया जा रहा है। वहीं सुपर टेक्नोलॉजी एसोसिएशन आफ इंडिया, नई दिल्ली के अध्यक्ष डा. जीएससी राव ने चीनी उत्पादक राज्यों की बाजार व्यवस्था पर चर्चा की। मुख्य अतिथि मुख्य अतिथि

सीएसजेएमयू के कुलपति प्रो. जे.बी. वैशम्पायन ने थे। कार्यक्रम में शक्ति अभियंताओं व अल्कोहल तकनीकविदों को चीनी उत्पादन में होने वाले शोध की जानकारी दी जाएगी। आईएसजीईसी नई दिल्ली के अनुराग गोयल, डॉ. आशुतोष बाजपेई, एमके बनर्जी आदि ने व्याख्यान प्रस्तुत किए। संचालन डॉ. स्वेन ने किया।

दैनिक जागरण

08-07-2014

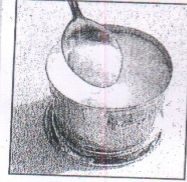
एनएसआई में रिफ्रेशर कोर्स शुरू

कानपुर : राष्ट्रीय शक्ति संस्थान (एनएसआई) में सोमवार से पांच दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स शुरू हो गया। इस कोर्स में उत्तर प्रदेश के अलावा महाराष्ट्र, कर्नाटक, बिहार, पंजाब व हरियाणा समेत अन्य प्रदेशों से 60 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। रिफ्रेशर कोर्स का उद्घाटन छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कुलपति प्रोफेसर जे.बी. वैशम्पायन ने किया। एनएसआई के निदेशक डॉ. नरेंद्र मोहन समेत शिक्षक व प्रतिभागी थे।

India still lags behind in sugar export: Expert

TIMES NEWS NETWORK

Kanpur: A five-day refresher course for sugar engineers, sugar technologists and alcohol technologists began at National Sugar Institute (NSI) here on Monday. A total of 60 delegates from all over the country are taking part in it. The course was inaugurated by JV Vaishampayan, vice-chancellor, CSJM University. The first lecture was delivered by NSI director Narendra Mohan in which he presented the domestic and global sugar and ethanol scenario. He said that though Indian production is 14 to 16% of world production but the country is far behind other Asian countries like Thailand when it comes to sugar export.



The ethanol scenario is also not encouraging. "We are not able to produce ethanol to meet requirement of 5% blending with gasoline. The need is to develop innovative technologies for power generation like biomass integrated gasifier and gas turbine combined cycle by which power generation can be increased to 220-250 KWH/Ton in comparison to 125-150 KWH/Ton by conventional method. He stressed that alternate feed stocks like sweet sorghum, sugar beet and lignocellulosic material may be utilized for ethanol production to improve the profitability of sugar and allied industry.

President of Sugar Technologists' Association of India GSC Rao presented details of cane marketing system prevalent in various sugar producing states of the country. He emphasized on rational approach to develop a price mechanism for sugar cane price fixation uniformly based on Rangarajan Committee recommendations. Ashutosh Bajpai delivered lecture on cost economics in sugar industry and pointed out reasons for low recovery of sugar in factories especially in north India. The factories should have an option for cogeneration with production of raw/white sugar and alcohol production from heavy molasses. MK Banerjee said that the operation of modern sugar plant cannot be visualized without the smart looking distributed control system (DCS). Use of DCS leads to various advantages like overall optimization, easing of operation and maintenance tasks, easy monitoring of more plant parameters.

Need equilibrium between cane growers', industry interests

HT Correspondent

■ hcitykanpur@hindustantimes.com

KANPUR: Inconsistent decisions of policymakers with regard to the sugar industry had hampered its growth, said CSJMU vice-chancellor JV Vaishampayan, while inaugurating a six-day refresher course at the National Sugar Institute (NSI) on Monday.

He said that hitherto, political considerations and not industry requirements and financial feasibility had been factors in decision-making. Thus, often sugar prices were reduced, even as the price of sugarcane was hiked, leading to an imbalance.

Calling for rational decisions to maintain equilibrium between cane growers and industrialists in the sector, Vaishampayan suggested subsidies should be provided to promote sugar exports.

NSI director Narendra Mohan said though India accounted for 14-16% of the world's sugar production, it was far behind Asian countries, like Thailand. "Similarly, we are unable to pro-

SUGGESTIONS

- Experts suggested the use of sweet sorghum and sugar beet to meet the requirement of ethanol production.
- They also called for subsidies to promote sugar exports.

duce enough ethanol to meet the requirement of 5% blend with gasoline," said Dr Mohan.

He suggested the use of sweet sorghum and sugar beet to meet the requirement of ethanol production and increase profitability of sugar and allied industries.

President of the Sugar Technologists' Association of India, GSC Rao said the production of cane should be enhanced using new varieties of the crop.

Eminent resource persons addressed the three technical sessions on the first day of the course and gave tips to technologists about improving quality and sugar recovery. About 60 participants from six states attended the sessions.

चीनी उत्पादन संग बिजली, एथनॉल भी बनाएं

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

चीनी (शुगर) राजनीतिक रूप से संवेदनशील मुद्दा है। किसानों को गन्ने की अधिक कीमत चाहिए और जनता को सस्ती चीनी। यह काम आसान नहीं है पर असंभव भी नहीं। वैज्ञानिकों को ऐसे प्रयास करने होंगे जिससे इस समस्या का हल निकल सके। वैज्ञानिकों ने जवाब में इसका विकल्प रखा। गन्ने से चीनी बनाने के साथ इससे बिजली के उत्पादन और पेट्रोल में मिलाए जाने वाले एथनॉल पर खूब चर्चा हुई। अन्य देशों के मुकाबले अमेरिका एथनॉल उत्पादन में नंबर वन है। देश में भी इसका उत्पादन बढ़ सकता है बशर्ते ऐसे पेड़ों को खराब पड़ी जमीन पर लगाया जाए जो इसके उत्पादन में सहायक हो सकें।

नेशनल शुगर इन्स्टीट्यूट (एनएसआई) में सोमवार को देश भर से आए चीनी उत्पाद के विशेषज्ञों के पांच दिवसीय रीफ्रेशर कोर्स की शुरुआत हुई। छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय (सीएसजीएमयू) के कुलपति प्रोफेसर जेवी वैशम्पायन ने कहा कि चीनी का अर्थशास्त्र काफी निराला है। इस क्षेत्र में तमाम तरह की समस्याएं हैं। सभी का समाधान निकालकर ही संकट को दूर



एनएसआई में देश भर से आए चीनी उत्पाद के विशेषज्ञों के पांच दिवसीय रीफ्रेशर कोर्स में मौजूद वैज्ञानिक। • हिन्दुस्तान

किया जा सकता है।

बिजली उत्पादन पर देना होगा ध्यान
: एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेन्द्र मोहन ने कहा कि चीनी और अल्कोहल के देश और विदेश के पूरे माहौल को समझना जरूरी है। चीनी के उत्पादन में हमारी ग्लोबल हिस्सेदारी 16 फीसदी है। लेकिन निर्यात के मामले में हम छोटे देश जैसे थाईलैण्ड से भी पीछे हैं। एथनॉल की स्थिति भी अच्छी नहीं है। हम पेट्रोल में पांच फीसदी मिलाने के लिए भी एथनॉल नहीं बना पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमें भीठी चरी, चुकन्दर और लिग्नोसेलुलॉसिक बायोमास से एथनॉल

बनाने की दिशा में कदम बढ़ाना चाहिए। नवीन टेक्नालॉजी से एक टन बायोमास से 250 किलो वाट तक बिजली का उत्पादन किया जा सकता है।

नवीन तकनीक की जरूरत : शुगर टेक्नालॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष डॉ. जीएससी राव ने नवीन टेक्नालॉजी पर जोर दिया। कहा, अब पुराना ढर्रा छोड़िए। अब न पहले की तरह गन्ना बिकेगा और न चीनी मिल वैसी खरीद करेगी। इस अवसर पर अनुराग गोयल, डॉ. आशुतोष बाजपेई, एमके बसुजी, डॉक्टर स्वेन और डॉ. संतोष कुमार ने भी भाग लिया।

देशों में एथनॉल उत्पादन

■ अमेरिका	53 फीसदी
■ भारत	3.0 फीसदी
■ चीन	7.0 फीसदी
■ यूरोपीय देश	6.0
■ ब्राजील	21 फीसदी

पथूल एथनॉल उत्पादन

■ अमेरिका	62 फीसदी
■ ब्राजील	23 फीसदी
■ चीन	9.2 फीसदी
■ भारत	0.1 फीसदी

एनएसआई रखेगा सेना की सेहत का ख्याल

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

सेना को मिलने वाली चीनी सेहत को नुकसान न पहुंचाए इसकी जिम्मेदारी अब अपना राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) निभाएगा। मेजरल जनरल एमपी सिंह के नेतृत्व में मंगलवार को एक प्रतिनिधि मण्डल आर्मी हेडक्वार्टर से एनएसआई आया और निदेशक प्रोफेसर नरेन्द्र मोहन व अन्य वैज्ञानिकों के साथ वार्ता की।

एडिशनल डायरेक्टर जनरल (स्प्लाइ एण्ड ट्रेफिक) आर्मी हेडक्वार्टर मेजर जनरल एमपी सिंह के नेतृत्व में आई टीम ने एनएसआई की चीनी फैक्ट्री देखी। यहां की सभी प्रयोगशालाएं देखीं जहां चीनी को टेस्ट किया जाता है। यहां के वैज्ञानिकों से भी इस बाबत बात की। पूरे संस्थान को देखने के दौरान तमाम सवाल पूछे जिनके जवाब दिए गए। निदेशक ने उन्हें बताया कि यह अकेला संस्थान है जहां पढ़ने वाले छात्रों को फैक्ट्री में प्रयोग करने को मिलते हैं। संस्थान के पास अपने खेत हैं जहां गन्ने की खेती भी की जाती है।

अच्छी चीनी की खरीद कैसे हो
निदेशक ने बताया कि सेना में अधिक चीनी की खरीद होती है। इसकी गुणवत्ता और लंबे समय तक स्टोर की क्षमता के आधुनिक तरीकों को सेना के जिम्मेदार समझना चाहते थे। निदेशक ने बताया कि सेना चाहती है कि जो भी वह चीनी खरीदे उसकी गुणवत्ता की जांच एनएसआई करें। निदेशक ने जनरल को बताया कि उनका संस्थान इसके लिए तैयार है और संस्थान के लिए भी यह गौरव का विषय होगा। संस्थान में चीनी

- एडिशनल डायरेक्टर जनरल मेजर एमपी सिंह के नेतृत्व में आई टीम
- चीनी की गुणवत्ता में मदद लेगी सेना, निदेशक के साथ चली बातचीत



एडिशनल डायरेक्टर जनरल एमपी सिंह के नेतृत्व में आई टीम ने एनएसआई निदेशक से की वार्ता।

अच्छी चीनी के गुण

- सुक्रोज : 99.5 फीसदी
- नमी : 0.05 फीसदी से कम
- सल्फर डाई ऑक्साइड : 70 पीपीएम (अधिकतम)
- कलर : 31-30 (सफेद)

की गुणवत्ता आदि के आकलन करने की भरपूर सुविधा है। पहली बैटक में यह तय तो नहीं हो सका कि एनएसआई सैनिकों को चीनी टेस्ट करने का प्रशिक्षण देगा लेकिन निदेशक के अनुसार मेजर जनरल ने अपने सैनिकों को

सेना की टीम ने एनएसआई का निरीक्षण किया। सेना अपने यहां चीनी टेस्ट करने की लैब स्थापित करना चाहती है, एनएसआई से सहयोग मांगा है। सेना की चीनी यहां टेस्ट करने की बात भी चर्चा में रही। अभी कोई निर्णय नहीं हुआ है, आगे बात जारी रहेगी। - प्रो. नरेन्द्र मोहन, निदेशक, एनएसआई

प्रशिक्षित करने के बारे में जानकारी भी मांगी। इस पर सहमति भी जताई। इसके अतिरिक्त सेना अगर अपने यहां कोई चीनी क्वालिटी कंट्रोल लैब स्थापित करना चाहेगा तो उसमें एनएसआई मदद भी करेगा।

Army seeks NSI assistance in acquiring sugar testing facilities

KANPUR: The officials of the Indian Army have sought assistance from the National Sugar Institute (NSI) in acquiring testing facilities of sugar, which they have to buy from the open market.

Director NSI Dr Narendra Mohan said a deputation of the army officials led by additional director general major MP Singh visited the NSI on Tuesday and held discussions with him and other scientists in connection with ensuring the purchase of the quality sugar for the army staff.

Dr Narendra said that no official agreement with the army



■ Narendra Mohan, NSI head.

for testing the quality of the purchased sugar was finalized so far. Any agreement would be made after the institute received an official communication in this respect from the Army

Headquarters.

He said that the army has been facing problems in ascertaining the quality of the sugar as it has to make purchase of sugar from the open market as there was no facility of buying the levy sugar.

The NSI has proposed to conduct the testing of the sugar purchased by the army. It also gave an option to train the army technical staff for the same. Finally, it has also offered to set up a separate unit for sugar testing at the existing laboratory of the army, the director said while insisting that no final decision have been taken but talks would continue in this respect. **HTC**

Third day of refresher course at NSI held

Times News Network

Kanpur: The refresher course being organised at National Sugar Institute, entered into its third day on Wednesday.

Two lectures were delivered. The first lecture was delivered by M. Muthujoyothi, Business Head, DCM Shri Ram Consolidated Ltd, New Delhi on the topic 'Developments in Process house for energy conservation in sugar Industry'. He discussed in detail the various steam and power saving devices by which energy saving to

an extent of 10-15% can be achieved.

Second lecture of the day was delivered by K Jagadeesh from JP Mukherjee Associates Pune on the topic 'Raw Sugar-A recent trend in Sugar Production'. K Jagadeesh told that under the present circumstances we must go in for production of raw sugar which can be easily exported at the same time all the machinery of plantation sugar can be utilized and the quantity of Chemicals and lime will be reduced by above 40%.

रा शुगर बनाकर विदेशों में निर्यात करें भारत रिफ्रेशन कोर्स के तीसरे दिन दो व्याख्यान दिये गये

कानपुर, 9 जुलाई। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर के सभागार में आयोजित पाँच दिवसीय रिफ्रेशन कोर्स के तीसरे दिन आज वक्ताओं ने कहा कि चीनी उद्योग को बढ़ाने के लिए टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल जरूरी है ताकि गन्ने से अधिकाधिक चीनी का उत्पादन किया जा सके। उन्होंने वर्तमान परिस्थितियों में रा शुगर अधिक से अधिक बनाकर विदेशों में निर्यात कर सप्लाई करनी चाहिये।

बुधवार को संस्थान में प्रथम व्याख्यान में डी.सी.एम. श्रीराम कन्सोलिडेटेड लिमिटेड, नई दिल्ली के व्यापार प्रमुख एम. मुथुज्योति ने डेवलपमेंट्स इन प्रोसेस हाउस फार एनर्जी कन्जर्वेशन इन शुगर इन्डस्ट्री विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विभिन्न प्रकार के उपकरणों के बारे में जानकारी दी और जिसके उपयोग से भाप एवं बिजली की १०-१५ प्रतिशत तक बचत की जा सकती है। दूसरे व्याख्यान में रा शुगर-ए-रिसर्च ट्रेन्ड इन शुगर प्रोडक्शन विषय पर बोलते हुए एसोसिएट पूना से आये के. जगदीश ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में रा शुगर बनाना एक उत्तम विकल्प है जो विदेशों



व्याख्यान में एम. मुथुज्योति, के. जगदीश व अन्य।

छाया: आज

को इसका निर्यात करना आसान है। साथ ही इसे बनाना भी लाभप्रद होगा। क्योंकि इसमें चूना तथा अन्य रसायनों की खपत लगभग ४० प्रतिशत कम हो जाती है। आज सभी प्रतिभागी कानपुर भ्रमण पर निकल गये। इस दौरान संस्थान के निदेशक डा. नरेंद्र मोहन, जे.पी. मुखर्जी, प्रो. राव, प्रो. जे.बी. वैशम्पायन आदि मौजूद रहे।

चीनी मिलों में ऊर्जा खपत कम करना चुनौतीपूर्ण



प्रतिभागियों के सवाल जवाब देते मुख्य अतिथि।

छाया : आज

कानपुर, 11 जुलाई। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर में चल रहे रिफ्रेशन कोर्स के अंतिम दिन आज साउथ इंडियन शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन, चेन्नई के अध्यक्ष आर.बी. बल्लल ने कहा कि चीनी मिलों में ऊर्जा खपत कम करने चुनौतीपूर्ण कार्य है। लेकिन दक्षिण की चीनी मिलों में पूर्व में बिजली की खपत ३० किलोवाट-टीसीएच थी जो कि विभिन्न उपायों से २२ किलोवाट तक रह गयी है। अब हम डिफ्यूजर लगा दें तो यह खपत सिर्फ २० किलोवाट-टीसीएच तक लाई जा सकती है। आज खुले मंच पर विशेषज्ञों के एक पैनल में सवाल-जवाब किये गये जिससे प्रतिभागियों ने

अपनी जिज्ञासा शांत की। उच्च दावीय वायुलों के लिए जल परिशोधन विषय पर अपने व्याख्यान देते हुए पूर्व निदेशक एस.के. गुप्ता ने कहा कि इन वायुलों में जल परिशोधन अत्यन्त सावधानी पूर्वक करने की आवश्यकता है क्योंकि उच्च दबाव पर अगर

पानी में थोड़े भी खनिज रह

गये तो स्केलिंग के कारण कोई भी दुर्घटना हो सकती है। विशेषज्ञ पैनल में अध्यक्ष आर.बी. बल्लल, एनएसआई के निदेशक डा. नरेंद्र मोहन, एस.के. गुप्ता से प्रतिभागियों ने चीनी मिलों में बिजली एवं

भाप की खपत, शुगर लोस को कम करने, आधुनिक उपकरणों का इस्तेमाल बढ़ाने, चीनी निर्यात, गन्ने की प्रजातियों के विकास, चीनी मिलों की प्रोफिटैबिलिटी, ५ से १० एथेनाल ब्लेण्डड पेट्रोल परियोजना का भविष्य आदि विषयों पर सवाल पूछे गये जिनका सटीक जवाब दिये। आगामी भविष्य में १० फीसदी एथेनाल ब्लेण्ड को भी सफल बनाने की दिशा में कार्य करने का आवश्यक बताया है। प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र भी वितरित किये गये। इस दौरान संयोजक डी. स्वेन, डा. संतोष कुमार आदि मौजूद रहे।

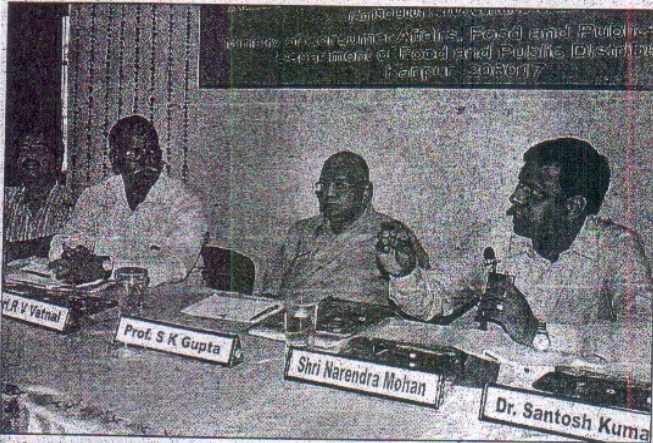
एनएसआई में एक्सपर्ट ने बताए चीनी उत्पादन बढ़ाने के टिप्स



कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में चल रहे रिफ़े शर् कोर्स के अंतिम दिन छात्रों के लिए खुले मंच का आयोजन किया गया। इसमें एक्सपर्ट ने उनके प्रश्नों के जवाब दिए। प्रश्न-प्रहर के दौरान छात्रों ने एक्सपर्ट पैनल से चीनी मिलों में बिजली और भाप की खपत, शुगर लॉस कम करने के तरीके, चीनी की गुणवत्ता सुधार,

चीनी निर्यात में आने वाली दिक्कतों, अंतरराष्ट्रीय चीनी बाजार में भारत की स्थिति सहित तमाम प्रश्न पूछे। एक्सपर्ट पैनल के विशेषज्ञ साउथ इंडियन शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन चेन्नई के अध्यक्ष आरबी बत्तल, पूर्व निदेशक राष्ट्रीय शर्करा संस्थान एवं शुगर कंसल्टेंट एसके गुप्ता, संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन, रिफ़े शर् कोर्स के संयोजक डा. स्वेन, आचार्य शर्करा अभियानिकी डा. संतोष कुमार ने छात्रों को जवाब दिए।

चीनी उद्योग दूसरे रास्ते तलाशे



◆ मिलों में ऊर्जा की खपत कम करने की बड़ी जरूरत

काम करने की जरूरत महसूस करते हुए बताया कि दक्षिण भारत में बिजली की खपत को आठ किलोवाट तक कम किया जा चुका है।

उन्होंने बताया जहां पहले बिजली की खपत 30 किलोवाट/टीसीएच थी उसे 22 किलोवाट/टीसीएच तक पहुंचाया जा चुका है। जबकि डिफ्यूजर का इस्तेमाल करते हम इस खपत को 20 किलोवाट/टीसीएच तक पहुंचा सकते हैं। एनएसआई के निदेशक नरेंद्र मोहन ने बताया कि चीनी उद्योगों को परंपरागत तरीके से न चला वैकल्पिक व्यवस्थाओं को तलाशना होगा। इनमें कोजनरेशन एथेनॉल भी एक विकल्प है। उन्होंने कोजनरेशन एथेनॉल पर जोर देते हुए बताया कि भविष्य में 10 फीसद एथेनॉल बलेड को सफल बनाने को उस दिशा में काम करने की जरूरत है।

शर्करा संस्था में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते निदेशक नरेंद्र कुमार।

कानपुर : राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में शुक्रवार को पांच दिवसीय रिफ़े शर् कोर्स के समापन समारोह में विशेषज्ञों ने चीनी उद्योगों के लिए वैकल्पिक तरीके तलाशने पर जोर दिया। समारोह में साउथ इंडियन शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन चेन्नई के अध्यक्ष आरबी बत्तल ने चीनी मिलों में ऊर्जा की खपत को कम करने की दिशा में